समकालीन भारतीय कला में चित्रकार सतीश गुजराल का योगदान

डॉ० ओ०पी० मिश्रा
(प्राचार्य)
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी
देहरादून, उत्तराखण्ड
ईमेलः mishraop200@gmail.com

लन्शी
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड
टेक्नोलॉजी देहरादून, उत्तराखण्ड

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० ओ०पी० मिश्रा,
नीलकमल सक्सेना

टाइपोग्राफी का विज्ञापन में महत्व और भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 12 pp. 70-75

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

जैसे हमारी अपनी बोलचाल की भाषा होती है वैसे ही कलाओं की भी अपनी भाषा होती है जैसे– हम अपने आस–पास के परिवेश प्रकृति या भावों और विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त करते हैं। वैसे ही चित्रकारी, संगीत या नृत्य के माध्यम से भी हम अपने आस–पास और प्रकृति को प्रकट कर सकते हैं। जैसे हम जो कुछ भी अपने आस–पास देखते हैं– सुनते हैं उसे हम किसी न किसी रूप में और नए–नए तरीके से किसी से सामने कहना या प्रकट करना चाहते हैं। समुद्र में उठती गिरती लहरों को देखकर चित्रकार उसे रंगों में सजाता है। चिड़िया की चहचहाट को गायक स्वरों में सजाता है तो नर्तक मन के भावों को विभिन्न मुद्राओं में सजाता है। कभी चित्रों में तो कभी गीतों में, कभी नृत्य में, तो कभी संगीत में, यह कहते–सुनने की परंपरा सदियों से चल रही है और आज भी नए–नए तरीकों में लगातार जारी है। हमारे देश भारत में जाने कितनी उत्सव–त्यौहार मनाए जाते हैं। विविधता ही हमारी पहचान है। जिस तरह अलग–अलग संस्कृतियों और अलग–अलग त्यौहार हमारी पहचान है वैसे ही अलग–अलग कलाएं भी हमारी अनूठी पहचान हैं। भारतीय कला जहां एक ओर वैज्ञानिक और तकनीक आधार रखती है, वहीं दूसरी ओर भाव एवं रस को सदैव प्राणतत्वण बनाकर रखती है। कला का प्राण है रसात्मकता। रस अथवा आनंद अथवा आस्वाद्य हमें स्थूल से चेतना सत्ता तक एकरूप कर देता है। जो मानवीय संबंधों और स्थितियों की विविध भावलीलाओं और उसके माध्यम से चेतना को कला उजागर करती है। समकालीन भारतीय कला में भिन्न–भिन्न समय में विभिन्न कलाकारों द्वारा विभिन्न शैलियां और माध्यम और तकनीक विकसित हुई। समकालीन कला में कलाकारों का योगदान अतुल्य रहा है। जिन्होंने अपनी कला से समाज को प्रभावित किया। जिसमें सतीश गुजराल जो की भारत के महान कलाकारों में से एक है। जिन्होंने समकालीन कला के क्षेत्र में नई उपलब्धियां हासिल करी और अपनी कला में एक अलग पहचान बनाई।

मुख्य बिंन्दु

समकालीन, सामाजिक, प्रभाववादी, आधुनिक कलाकार।

पद्म विभूषण से सम्मानित और बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार, मूर्तिकार, लेखक और वास्तुकार सतीश गुजराल का 94 साल की उम्र में निधन हो गया। वो भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के छोटे भाई थे। भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सन 1999 में उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया था।

1925 में लाहौर में जन्में गुजराल ने विभाजन का दुख और भयावहता देखी। इसके बाद वह सिमला चले गए, जहां उन्होंने खुद को पेंटिंग में तल्लीन कर लिया। सतीश को कला का राष्ट्रीय पुरस्कार तीन बार प्राप्त हो चुका है।

सन 1952 में उन्हें एक छात्रवृत्ति मिली जिसके बाद उन्होंने मैक्सिको के पलासियो नेशनेल डि बेलास आर्ट में अध्ययन किया। यहाँ पर उन्हें डिएगो रिवेरा और डेविड सेकुएइरोस जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के अंतर्गत कार्य करने और सीखने का अवसर मिला। इसके बाद उन्होंने यू.के. के इंपीरियल सर्विस कालेज विंडसर में भी कला का विधिवत अध्ययन किया।

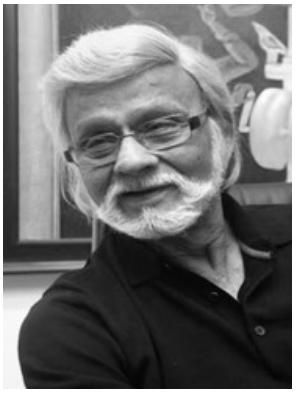

सतीश गुजराल का जन्म 25 दिसम्बर, 1925 को ब्रिटिश इंडिया के झेलम (अब पाकिस्तान) में हुआ था। आठ साल की उम्र में चोट लगने के कारण इन्हें कम सुनाई पड़ने लगा। उन्होंने लाहौर स्थित मेयो स्कूल आफ आर्ट में पाँच वर्षों तक अन्य विषयों के साथ–साथ मृत्तिका शिल्प और ग्राफिक डिज़ायनिंग का अध्ययन किया। इसके पश्चात् सन् 1944 में वे बॉम्बे चले गए जहाँ उन्होंने प्रसिद्ध सर जे.जे. स्कूल आफ आर्ट में दाखिला लिया पर बीमारी के कारण सन् 1947 में उन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। सन् 1952 में उन्हें एक छात्रवृत्ति मिली जिसके बाद उन्होंने मैक्सिको के पलासियो नेशनेल डि बेलास आर्ट में अध्ययन किया। यहाँ पर उन्हें डिएगो रिवेरा और डेविड सेकुएइरोस जैसे प्रसिद्ध कलाकारों के अंतर्गत कार्य करने और सीखने का अवसर मिला। इसके बाद उन्होंने यू.के. के इंपीरियल सर्विस कालेज विंडसर में भी कला का विधिवत अध्ययन किया।

भारत के विभाजन का असर युवा सतीश के मन पर बहुत पड़ा और शरणार्थियों के मन की व्यथा उनके कला में व्यक्त होती है। सन् 1952 से लेकर सन् 1974 तक गुजराल ने अपने अपनी मूर्तियों, चित्रों और दूसरी कलाओं को दुनियाभर के शहरों जैसे न्यू यॉर्क, नयी दिल्ली, मोंट्रियल, बर्लिन और टोक्यो आदि में प्रदर्शित किया।

सतीश गुजराल एक वास्तुकार भी थे। उन्होंने नई दिल्ली स्थित बेल्जियम के दूतावास का भी डिजाईन बनाया जिसे 'इंटरनेशनल फोरम ऑफ़ आर्किटेक्ट्स' ने '20वीं शदी की दुनिया की सबसे बेहतरीन इमारतों, में शामिल किया।

उन्होंने दुनियाभर के अनेक होटलों, विश्वविद्यालयों, आवासीय भवनो, उद्योग स्थलों और धार्मिक इमारतों की शानदार वास्तु परियोजनाएँ तैयार की।

उन्होंने अपने रचनात्मक जीवन में अमूर्त चित्रण किये और चटकीले रंगों के सुंदर संयोजन बनाए। सतीश गुजराल ने अपनी कला में जीव–जंतुओं और पक्षियों को भी सहज स्थान दिया। उन्होंने अपने कृतियों

के लिए प्रेरणा इतिहास, लोक कथाओं, पुराणों, प्राचीन भारतीय संस्कृति और विविध धर्मों के प्रसंगों से लिया और अपने चित्रों में सँजोया।

मेयो स्कूल ऑफ आर्ट, लाहौर में पाँच वर्षों तक उन्होंने अन्य विषयों के साथ–साथ मृत्तिका शिल्प और ग्राफिक डिज़ायनिंग का विशेष अध्ययन किया। जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट बाम्बे, पलासियो नेशनेल डि बेलास आर्ट, मेक्सिको तथा इंपीरियल सर्विस कालेज विंडसर, यूके में कला की विधिवत शिक्षा प्राप्त करने वाले सतीश गुजराल ने अपनी रचना यात्रा में कभी भी सीमाएँ नहीं खींचीं और माध्यमों के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग किये। रंग और कूची के साथ–साथ सिरामिक, काष्ठ, धातु और पाषाण– उन्होंने हर जगह अपनी कलात्मक रचनाशीलता का परिचय दिया।

आमतौर पर आधुनिक कलाकारों की प्रेरणा का स्त्रोत योरोप रहा है परन्तु सतीश गुजराल पर मैक्सीकन कला का प्रभाव है। क्योंकि उन्होंने जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट बम्बई तथा जी.डी. आर्ट्स कालिज लाहौर में शिक्षा पाने के बाद मैक्सिकों में जाकर एडवांस पेन्टिंग तथा भित्ति चित्र का डिप्लोमा प्राप्त किया। उनकी कला में मैक्सिकों के मुख्य चित्रकार सिकुईरोज, ओरोज्को तथा रिवेश की छाप मिलती है। उनके प्रभाववादी चित्रों में सबसे अधिक ओरोज्को की छाप मिलती है यह उन्होंन स्वयं भी माना है। परम्परागत चित्रकला के वे सदा से ही विरोधी रहे हैं। उनके अनुसार जो मनुष्य देखता है तथा महसूस करता है उसी को स्वछन्दता से निर्भीक होकर चित्रित करना चाहिये। इन्होंने अपने चित्रों में अधिकतर मानव कष्टों का ही निरूपण किया है जिसमें सामाजिक वास्तविकता है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के बटवारे का समय गुजराल महोदय ने अपनी आंखों से सन् 1947 में देखा था। उस दुःखद समय का भी उनके मनस्पटल पर प्रभाव पड़ा जिसके कारण 'मानव' उनका मुख्य विषय बन गया।

विषय चाहे कोई भी हो, सतीश गुजराल उनकी बारीकियों और उनके पीछे के इतिहास को समझकर ही अपनी कृतियों का निर्माण करते हैं। यह उनके कार्यों को गहराई देता है और उन्हें उनके समकालीनों के कार्यों से अलग करता है। कई महान कलाकारों की तरह, सतीश भी अपनी परंपरा से छेड़छाड़ किए बिना आधुनिक कला बनाने में माहिर हैं, क्योंकि किसी भी कला की वास्तविक सुंदरता यहीं निहित होती है। सतीश गुजराल की कला विविध माध्यमों यथा–म्यूरल, स्थापत्य, चित्रकला, रेखांकन और शिल्प कल्पनात्मक अन्तःस्फूर्त तथा अन्तहीन अन्वेषण की ओर निरन्तर अग्रसर है। इस बहुमुखी व जटिल कलात्मक अभिव्यक्ति व अन्तर्दृष्टि का स्त्रोत आपके निजी अनुभव है।

कोलाज चित्रण

कोलाज चित्रण सतीश गुजराल का सबसे प्रिय माध्यम रहा है। गुजराल कागजो को फाड़कर भिन्न–भिन्न प्रकार से चिपकाते हैं, जिसके पीछे की सुनियोजित प्लानिंग नहीं रहती।

मोनोग्राफ

सतीश गुजराल की कलात्मक उपलब्धियों पर राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ने एक 'मोनोग्राफ' प्रकाशित किया है, जिसमे उनके अनेक चित्रो की प्रतिकृतिया भी प्रकाशित की गई।

चित्र 'रिवोल्यूशन' ओर 'स्नेअर' ऑफ मेमोरी (1952–59) सतीश गुजराल की है।

'प्लेमेट्स' (एक्रेलिक) कृति के कलाकार सतीश गुजराल थे।

'क़व्वाल श्रृंखला' (1997) और 'द सेलेब्रेशन श्रृंखला' सतीश गुजराल का है।

सतीश गुजराल की मूर्ति 'शक्ति एंड गणेश' (1977–81) पर आदिवासी कला का प्रभाव है।

सतीश गुजराल के चित्रो का संग्रह

नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली, पंजाब संग्रहालय, चंडीगढ़, डेविस, कोपेनहावेन, लॉस एंजलिस, मैक्सिको, न्ययॉर्क, पिट्सबर्ग, स्कॉटहोम, वाशिंगटन, लंदन असम, वी.के. नेहरू, नई दिल्ली एवं अन्य प्रमुख व्यक्तियों के संग्रहों मे संग्रहीत है।

सतीश गुजराल के प्रसिद्ध चित्र

तूफान के तिनके, तिरस्कार, मैक्सिकन नारी, शक्ति गणेश, परिवार, आदमी सेलिब्रेशन, काला चाँद, विलाप, हार्स (मूर्ति), मॉर्निंग, मेडिटेशन (मूर्ति), आँधी मे अनाथ, जश्ने आजादी, संस्कृति, मोहनजोदड़ों, कृष्ण मेनन, आत्महत्या के पूर्व, दर्द का मसीहा, स्मृतियो का जाल, दोपहरी का अँधियारा।

अपने एक इंटरव्यू में उन्होंने इस बात का जिक्र किया था कि वह कला से बोर हो गए थे क्योंकि उन्हें लगता था कि वह कला के साथ वह सब कुछ कर चुके हैं जो वह कर सकते थे। इस प्रकार 1968 में, उन्होंने वास्तुकला में कदम रखा, इस तथ्य के बावजूद कि कई लोग उन्हें ऐसा करने के लिए मूर्ख मानते थे, क्योंकि उन्होंने वास्तुकला का अध्ययन भी नहीं किया था। लेकिन जल्द ही, उन्होंने अपने आलोचकों को गलत साबित कर दिया जब बेल्जियम के राजनयिकों ने उनसे संपर्क किया और उनसे एक ऐसी इमारत बनाने का अनुरोध किया जो भारत में उनके दूतावास के रूप में काम करेगी। 1984 में, उन्होंने अपना प्रोजेक्ट पूरा किया और अपने आलोचकों को आश्चर्यचकित कर दिया, क्योंकि इमारत आश्चर्यजनक लग रही थी। इतना कि, बाद में अंतर्राष्ट्रीय वास्तुकारों द्वारा आयोजित एक मंच में इसे 20वीं सदी की सबसे बेहतरीन इमारतों में से एक करार दिया गया। इसके बाद उन्होंने रियाद में सऊदी अरब का ग्रीष्मकालीन महल, हैदराबाद में सीएमसी अनुसंधान केंद्र और गोवा विश्वविद्यालय जैसी शानदार इमारतें बनाईं। सऊदी अरब के ग्रीष्मकालीन महल को सऊदी अरब के राजकुमार ने बेल्जियम दूतावास से अत्यधिक प्रभावित होने के बाद बनाने के लिए कहा था। हालाँकि, उनके वास्तुशिल्प करियर की शुरुआत शानदार रही, लेकिन वास्तुकला से ऊब जाने के कारण सतीश ने अपना ध्यान वापस पेंटिंग की ओर स्थानांतरित कर दिया।

उनकी कृतियाँ हिरशर्न कलेक्शेन वाशिंगटन डी.सी., हार्टफोर्ड म्यूज़ियम तथा द म्यूज़ियम ऑफ मार्डन आर्ट न्यू यॉर्क जैसे अनेक प्रसिद्ध संग्रहालयों में प्रदर्शित की जा चुकी हैं।

अपने पूरे जीवन में, सतीश गुजराल को कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उनका कहना है कि उनके स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों ने उन्हें जीवन पर पूरी तरह से अलग धारणा देने में काफी मदद की है। उनका कहना है कि प्रत्येक बार ठीक होने के बाद, उन्हें अपने जीवन से सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जो उनके कार्यों में परिवर्तित होता है। जब वह मात्र 10 वर्ष के थे तब उनकी स्वास्थ्य समस्याएं शुरू हो गईं, जिससे उनकी सूनने की क्षमता प्रभावित हुई। 1998 में ही वह पूरी तरह से ठीक हो गए और सर्जरी के बाद उनकी सुनने की क्षमता वापस आ गई।

सतीश गुजराल का विवाह किरण गुजराल के साथ हुआ और दोनों भारत की राजधानी दिल्ली में अपना निवास बनाया। उनके पुत्र मोहित गुजराल एक प्रसिद्ध वास्तुकार हैं और भूतपूर्व मॉडल फिरोज गुजराल से विवाहित हैं। उनकी बड़ी बेटी अल्पना ज्वेलरी डिजाइनर और दूसरी बेटी रसील एक इंटीरियर डिज़ाइनर हैं। उनके बड़े भाई इन्दर कुमार गुजराल 1997–1998 में भारत के प्रधानमंत्री रहे।

उनके जीवन और काम पर कई वृत्तचित्र बन चुके हैं। फरवरी 2012 में 'अ ब्रश विथ लाइफ' नाम का 24 मिनट का एक वृत्तचित्र जारी किया गया। यह वृत्तचित्र उनकी इसी नाम की एक पुस्तक पर आधारित है।

सतीश ने अपनी आत्मकथा भी लिखी। इसके अतिरिक्त उनके कार्यों और जीवन पर तीन और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

2014 में, सतीश गुजराल ने अपनी कुछ कृतियों को भारत कला मेले में प्रदर्शित करने का निर्णय लिया। इसने कई कला प्रेमियों को एक अनूठा अवसर प्रदान किया, जिन्हें इससे पहले उनकी कला को देखने का सम्मान नहीं मिला था। प्रदर्शित कलाकृतियाँ उनके निजी संग्रह से थीं, जो 1950 से 2013 के बीच बनाईं गई थीं। कुल 26 पेंटिंग और मूर्तियां बिक्री के लिए रखी गई थीं, जिनमें से पांच प्रसिद्ध विभाजन–प्रोरित कार्यों से संबंधित थीं।

सतीश गुजराल का निधन 26 मार्च 2020 को नयी दिल्ली में हो गया, मृत्यु के समय उनकी आयु 94 वर्ष थी।

विभिन्न कलाओं में अपनी नैसर्गिकता के लिए उन्हें कई राष्ट्रिय–अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

- सन् 2014 में उन्हें 'एन.डी.टी.वी. इंडियन ऑफ़ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- सन् 1999 में भारत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया।
- मेक्सिको का 'लियो नार्डो द विंसी' पुरस्कार भी इन्हें मिल चुका है।
- सतीश गुजराल को बेल्जियम के राजा का 'आर्डर ऑफ़ क्राउन' सम्मान भी प्राप्त है।
- सन् 1989 में इन्हें 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ आर्किटेक्चर' तथा 'दिल्ली कला परिषद' द्वारा सम्मानित किया गया।
- नयी दिल्ली स्थित बेल्जियम दूतावास के भवन की परियोजना के लिये वास्तुरचना के क्षेत्र में उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली है। इस इमारत को 'इंटरनेशनल फोरम आफ आर्किटेक्ट्स' द्वारा बीसवीं सदी की 1000 सर्वश्रेष्ठ इमारतों की सूची में स्थान दिया गया है।

- वे तीन बार कला का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं– दो बार चित्रकला और एक बार मूर्तिकला के लिये
- दिल्ली व पंजाब की राज्य सरकारों ने भी उन्हें उनके कार्यों और उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया है।

संदर्भ

1. चतुर्वेदी, ममता. (2016). समकालीन भारतीय कला. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. अक्टूबर।
2. शर्मा, चंद्र लोकेश. (2018). भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास. कृष्ण प्रकाशन मीडिया (प्रा.) लि. (गोयल पब्लिशिंग हाउस). 15 अक्टूबर।
3. https://m.bharatdiscovery.org>india.
4. https://jivani.org/Biography/.
5. https://www.itshindi.com/satish-gujral.html.
6. https://www.amarujala.com/India.